International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 3.541 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 4, July 2017 |

हिंदी सगुण साहित्य में मीराबाई की कविता

ज्योति कुमारी

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, बहरोड़, अलवर

सार

मीराबाई (1498-1547) सोलहवीं शताब्दी की एक कृष्ण भक्त और कवयित्री थीं। मीरा बाई ने कृष्ण भक्ति के स्फुट पदों की रचना की है। संत रैदास या रविदास उनके गुरु थे।

मीराबाई को उनके देवर विक्रमादित्य ने मारने के लिए जहर का प्याला भेजा था जिसका उन पर कोई असर नहीं हुआ था

मीराबाई का जन्म सन 1498 ई॰ में पाली के कुड़की गांव में दूदा जी के चौथे पुत्र रतन सिंह के घर हुआ। ये बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। मीरा का विवाह मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में हुआ। चित्तौड़गढ़ के महाराजा भोजराज इनके पति थे जो मेवाड़ के महाराणा सांगा के पुत्र थे। विवाह के कुछ समय बाद ही उनके पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया, किन्तु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। मीरा के पति का अंतिम संस्कार चित्तोड़ में मीरा की अनुपस्थिति में हुआ। पति की मृत्यु पर भी मीरा माता ने अपना श्रृंगार नहीं उतारा, क्योंकि वह गिरधर को अपना पति मानती थी।[3]

वे विरक्त हो गईं और साधु-संतों की संगति में हरिकीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। पति के परलोकवास के बाद इनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। ये मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने कृष्णजी की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने कई बार मीराबाई को विष देकर मारने की कोशिश की। घर वालों के इस प्रकार के व्यवहार से परेशान होकर वह द्वारका और वृन्दावन गई। वह जहाँ जाती थी, वहाँ लोगों का सम्मान मिलता था। लोग उन्हें देवी के जैसा प्यार और सम्मान देते थे। मीरा का समय बहुत बड़ी राजनैतिक उथल-पुथल का समय रहा है। बाबर का हिंदुस्तान पर हमला और प्रसिद्ध खानवा का युद्ध उसी समय हुआ था। इन सभी परिस्थितियों के बीच मीरा का रहस्यवाद और भक्ति की निर्गुण मिश्रित सगुण पद्धति सर्वमान्य बनी।

परिचय

मीरा , जिन्हें मीराबाई के नाम से बेहतर जाना जाता है [2] और संत मीराबाई के नाम से सम्मानित , 16वीं सदी की हिंदू रहस्यवादी कवयित्री और कृष्ण की भक्त थीं । वह विशेष रूप से उत्तर भारतीय हिंदू परंपरा में एक प्रसिद्ध भक्ति संत हैं। [3] [4] [5]

मीराबाई का जन्म कुडकी (आधुनिक राजस्थान का नागौर जिला) में एक राठौड़ राजपूत शाही परिवार में हुआ था और उनका बचपन मेड़ता में बीता । भक्तमाल में उनका उल्लेख किया गया है , जो पुष्टि करता है कि वह लगभग 1600 ईस्वी तक भक्ति आंदोलन संस्कृति में व्यापक रूप से जानी जाती थीं और एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थीं। [6] [7]

मीराबाई के बारे में अधिकांश किंवदंतियों में सामाजिक और पारिवारिक परंपराओं के प्रति उनकी निडर उपेक्षा, कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति, कृष्ण को अपना पति मानना और उनकी धार्मिक भक्ति के लिए उनके ससुराल वालों द्वारा सताए जाने का उल्लेख है। [1] [6] वह कई लोक कथाओं और भौगोलिक किंवदंतियों का विषय रही हैं , जो विवरण में असंगत या व्यापक रूप से भिन्न हैं। [1] [8]

भारतीय परंपरा में कृष्ण की भावपूर्ण प्रशंसा में लाखों भक्ति भजनों का श्रेय मीराबाई को दिया जाता है, लेकिन विद्वानों द्वारा केवल कुछ सौ को ही प्रामाणिक माना जाता है, और शुरुआती लिखित रिकॉर्ड बताते हैं कि दो भजनों को छोड़कर, अधिकांश केवल इसी में लिखे गए थे। 18 वीं सदी। [9] मीरा से संबंधित कई कविताओं की रचना बाद में मीरा की प्रशंसा करने वाले अन्य लोगों द्वारा की गई थी। ये भजन एक प्रकार के भजन हैं , और पूरे भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं। [10]

चित्तौड़गढ़ किले जैसे हिंदू मंदिर मीराबाई की स्मृति को समर्पित हैं। [1] मीराबाई के जीवन के बारे में विवादित प्रामाणिकता की किंवदंतियाँ, आधुनिक समय में फिल्मों, फिल्मों, कॉमिक स्ट्रिप्स और अन्य लोकप्रिय साहित्य का विषय रही हैं। [11]

मीरा के बारे में प्रामाणिक रिकॉर्ड उपलब्ध नहीं हैं और विद्वानों ने माध्यमिक साहित्य से मीरा की जीवनी स्थापित करने का प्रयास किया है जिसमें उनका उल्लेख है और जिसमें तारीखों और अन्य क्षणों का उल्लेख है। मीरा ने अनिच्छा से 1516 में मेवाड़ के राजकुमार भोज राज से विवाह किया। [12] [13] उनके पति 1518 में दिल्ली सल्तनत के साथ चल रहे युद्ध में घायल हो गए थे , और

1521 में युद्ध के घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई। उनके पिता दोनों और ससुर (राणा सांगा) की प्रथम मुगल सम्राट बाबर के खिलाफ खानवा की लड़ाई में हार के कुछ दिनों बाद मृत्यु हो गई ।

अपने ससुर राणा सांगा की मृत्यु के बाद विक्रम सिंह मेवाड़ के शासक बने। एक लोकप्रिय किंवदंती के अनुसार, उनके ससुराल वालों ने उनकी हत्या करने की कई बार कोशिश की, जैसे मीरा को जहर का गिलास भेजना और उसे यह बताना कि यह अमृत है या उन्हें फूलों की जगह सांपों वाली टोकरी भेजना। [2] [12] भौगोलिक किंवदंतियों के अनुसार, किसी भी मामले में उसे कोई नुकसान नहीं हुआ, सांप चमत्कारिक रूप से कृष्ण की मूर्ति (या संस्करण के आधार पर फूलों की माला) बन गया। [8] [12] इन किंवदंतियों के एक अन्य संस्करण में, विक्रम सिंह ने उसे खुद डूबने के लिए कहा, जिसकी वह कोशिश करती है लेकिन वह खुद को पानी पर तैरती हुई पाती है। [14] एक अन्य किंवदंती में कहा गया है कि तीसरा मुगल सम्राट अकबर आया थातानसेन ने मीरा से मुलाकात की और एक मोती का हार भेंट किया, लेकिन विद्वानों को संदेह है कि ऐसा कभी हुआ था क्योंकि तानसेन उनकी मृत्यु के 15 साल बाद 1562 में अकबर के दरबार में शामिल हुए थे। [14] इसी तरह, कुछ कहानियों में कहा गया है कि गुरु रविदास उनके गुरु (शिक्षक) थे, लेकिन इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है। कुछ संस्करणों से पता चलता है कि संभवतः ऐसा हुआ होगा। अन्य असहमत हैं. [14]

2014 के तीन अलग-अलग सबसे पुराने रिकॉर्ड ज्ञात हैं जिनमें मीरा का उल्लेख है, [15] सभी 17वीं शताब्दी के हैं और मीरा की मृत्यु के 150 वर्षों के भीतर लिखे गए हैं, न तो उनके बचपन या भोजराज से उनके विवाह की परिस्थितियों के बारे में कुछ भी उल्लेख करते हैं और न ही वे इसका उल्लेख करते हैं। जिन लोगों ने उन पर अत्याचार किया वे उनके ससुराल वाले या किसी राजपूत शाही परिवार से थे। [16] नैन्सी मार्टिन-केरशॉ का कहना है कि जिस हद तक मीरा को चुनौती दी गई और सताया गया, उसका कारण धार्मिक या सामाजिक सम्मेलन होने की संभावना नहीं थी, बल्कि संभावित कारण राजपूत साम्राज्य और मुगल साम्राज्य के बीच राजनीतिक अराजकता और सैन्य संघर्ष था।

अन्य कहानियों में कहा गया है कि मीरा बाई ने मेवाड़ का राज्य छोड़ दिया और तीर्थयात्राओं पर चली गईं। अपने अंतिम वर्षों में, मीरा द्वारका या वृन्दावन में रहीं , जहां किंवदंतियों के अनुसार वह 1547 में कृष्ण की मूर्ति में विलीन होकर चमत्कारिक ढंग से गायब हो गईं। [1] [2] जबकि चमत्कारों का ऐतिहासिक साक्ष्यों की कमी के कारण विद्वानों द्वारा विरोध किया जाता है, यह व्यापक रूप से प्रचलित है। स्वीकार किया कि मीरा ने भक्ति के गीत रचते हुए अपना जीवन भगवान कृष्ण को समर्पित कर दिया, और वह भक्ति आंदोलन काल के सबसे महत्वपूर्ण कवि-संत में से एक थीं। [2] [14] [17]

विचार-विमर्श

मीरा बाई की कई रचनाएँ आज भी भारत में गाई जाती हैं, ज्यादातर भक्ति गीत (भजन) के रूप में, हालाँकि उनमें से लगभग सभी का दार्शनिक अर्थ है। [19] उनकी सबसे लोकप्रिय रचनाओं में से एक है " पायो जी मैंने नाम रत्न धन पायो ।, "मुझे भगवान के नाम के आशीर्वाद से समृद्धि दी गई है")। [20] [21] मीरा की कविताएँ राजस्थानी भाषा में गेय पद हैं । [14] जबकि हजारों छंदों का श्रेय उन्हें दिया जाता है, विद्वान इस बात पर विभाजित हैं कि उनमें से कितने वास्तव में मीरा द्वारा स्वयं लिखे गए थे। [22]उनके समय की उनकी कविताओं की कोई जीवित पांडुलिपियाँ नहीं हैं और उनकी दो कविताओं का सबसे पहला रिकॉर्ड 18वीं शताब्दी की शुरुआत का है, जो द्वारका मंदिर में द्वारकाधीश की मूर्ति में विसर्जित होने के 150 साल से भी अधिक समय बाद का है। [9] उनकी कविताओं का सबसे व्यापक संग्रह 19वीं सदी की पांडुलिपियों में मौजूद है। कविताओं की प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए, विद्वानों ने विभिन्न कारकों पर ध्यान दिया है जैसे अन्य पांडुलिपियों में मीरा का उल्लेख, साथ ही कविताओं की शैली, भाषा और रूप। इन प्रयासों के माध्यम से, उनका लक्ष्य मीरा की कविताओं के लेखकत्व को सत्यापित करना है। [9] [23] जॉन स्ट्रैटन हॉले चेतावनी देते हैं, "जब कोई मीराबाई की कविता के बारे में बात करता है, तो हमेशा एक रहस्य का तत्व होता है। (...) हमेशा यह सवाल बना रहना चाहिए कि क्या इनके बीच कोई वास्तविक संबंध है हम जिन कविताओं का हवाला देते हैं और एक ऐतिहासिक मीरा।" [24]

उनकी कविताओं में, कृष्ण एक योगी और प्रेमी हैं, और वह स्वयं एक योगिनी हैं जो आध्यात्मिक वैवाहिक आनंद में उनकी जगह लेने के लिए तैयार हैं। [9] मीरा की शैली में भावपूर्ण मनोदशा, अवज्ञा, लालसा, प्रत्याशा, खुशी और मिलन का आनंद शामिल है, जो हमेशा कृष्ण पर केंद्रित है। [23]

मेरा डार्क वन किसी विदेशी देश में चला गया है।
वह मुझे पीछे छोड़ गया है, वह कभी वापस नहीं आया, उसने मुझे कभी एक शब्द भी नहीं भेजा।
इसलिए मैंने अपने गहने, गहने और अलंकरण उतार दिए हैं, अपने सिर से अपने बाल काट लिए हैं।
और उसके निमित्त पवित्र वस्त्र पहिनाना, और चारों दिशाओं में उसकी खोज करना।
मीरा: जब तक वह अपने भगवान, डार्क वन से नहीं मिलती, वह जीना भी नहीं चाहती।

- मीरा बाई, जॉन स्ट्रैटन हॉले द्वारा अनुवादित [25]

मीरा कृष्ण के साथ अपने प्रेमी, भगवान और पर्वत उठाने वाले के रूप में व्यक्तिगत संबंध की बात करती हैं। (सांसों की माला पे सिमरू मैं पी का नाम) मीरा बाई द्वारा लिखित है जो कृष्ण के प्रति उनके समर्पण को दर्शाता है। उनकी कविता की विशेषता पूर्ण समर्पण है।

मुझे अपने प्रति इतना आकर्षित करने के बाद, तुम कहाँ जा रहे हो?
जब तक मैं तुम्हें देख न लूं, मुझे कोई शांति नहीं मिलती: मेरा जीवन, किनारे पर धुली हुई मछली की तरह, पीड़ा से छटपटाता है।
तुम्हारी खातिर मैं खुद को योगिनी बना लूंगी, मैं खुद को काशी की आरी पर चढ़ाकर मौत के घाट उतार दूंगी।
मीरा के भगवान चतुर पर्वत उठाने वाले हैं, और मैं उनका, उनके चरण कमलों का दास हूं।

- मीरा बाई, जॉन स्ट्रैटन हॉले द्वारा अनुवादित [26]

मीरा को अक्सर उत्तरी संत भक्तों के साथ वर्गीकृत किया जाता है जो भगवान श्री कृष्ण की बात करते थे।

परिणाम

जब 1604 में आदि ग्रंथ संकलित किया गया था, तो पाठ की एक प्रति भाई बन्नो नामक एक सिख को दी गई थी, जिसे गुरु अर्जन ने इसे बाध्य करने के लिए लाहौर की यात्रा करने का निर्देश दिया था। ऐसा करते समय, उन्होंने कोडेक्स की एक प्रति बनाई जिसमें मीराबाई की रचनाएँ शामिल थीं। इन अनधिकृत परिवर्धन को सिख गुरुओं द्वारा धर्मग्रंथ के मानकीकृत संस्करण में शामिल नहीं किया गया था, जिन्होंने उनके समावेश को अस्वीकार कर दिया था। [27] [28] [29] [30]

प्रेम अंबोध पोथी , गुरु गोबिंद सिंह का एक ग्रंथ है और 1693 ई. में पूरा हुआ, इसमें सिख धर्म के लिए महत्वपूर्ण सोलह ऐतिहासिक भक्ति संतों में से एक के रूप में मीरा बाई की कविता शामिल है । [31] विद्वान स्वीकार करते हैं कि मीरा भक्ति आंदोलन के केंद्रीय कवि-संतों में से एक थीं, जो धार्मिक संघर्षों से भरे भारतीय इतिहास के कठिन दौर के दौरान था। फिर भी, वे एक साथ सवाल उठाते हैं कि मीरा किस हद तक सामाजिक कल्पना का एक विहित प्रक्षेपण थी, जहां वह लोगों की पीड़ा और एक विकल्प की इच्छा का प्रतीक बन गई। [32] परिता मुक्ता को उद्धृत करते हुए डिर्क वाइमैन कहते हैं,

यदि कोई यह स्वीकार करता है कि मीरा कथा [उत्पीड़न और उसकी भक्ति के बारे में] के समान कोई व्यक्ति वास्तविक सामाजिक प्राणी के रूप में अस्तित्व में था, तो उसके दृढ़ विश्वास की शक्ति ने उस समय मौजूद क्रूर सामंती रिश्तों को तोड़ दिया। लोकप्रिय कल्पना की मीरा बाई, उस प्रत्याशित कट्टरपंथी लोकतंत्र के आधार पर एक अत्यंत कालानुक्रमिक व्यक्ति हैं, जो मीरा को उस ऐतिहासिकता से बाहर निकालती है जो अभी भी उनके लिए जिम्मेदार है। वह भविष्य के मूल में बसने के लिए अतीत के छायादार दायरे से आगे निकल जाती है, जो विकल्प तलाशने वाले लोगों की पीड़ा में सन्निहित है।

- डिर्क वाइमैन / परीता मुक्ता, ऑन मीरा [32] [33]

मीराबाई के बारे में आधुनिक मंच प्रदर्शन

मीरा का निरंतर प्रभाव, आंशिक रूप से, उनकी स्वतंत्रता का संदेश, देवता कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति और उनकी आध्यात्मिक मान्यताओं को आगे बढ़ाने का उनका संकल्प और अधिकार रहा है, जैसा कि उन्होंने अपने उत्पीड़न के बावजूद महसूस किया था। [32] [33] एडविन ब्रायंट लिखते हैं, भारतीय संस्कृति में उनकी अपील और प्रभाव, उनकी किंवदंतियों और कविताओं के माध्यम से, एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभरने से है, जो "जो सही है उसके लिए खड़ा होता है और अपने विश्वासों पर कायम रहने के लिए कड़वाहट सहता है, जैसा कि अन्य पुरुष और महिलाएं करते हैं", फिर भी वह प्यार की भाषा के साथ ऐसा करती है, शब्दों के साथ "भावनाओं की पूरी श्रृंखला जो प्यार को चिह्नित करती है, चाहे वह मनुष्यों के बीच हो या मानव और परमात्मा के बीच हो"। [34] संगीतकार जॉन हार्बिसन ने अपने मीराबाई गीतों के लिए बेली के अनुवादों को अनुकूलित किया । भारतीय फिल्म निर्देशक अंजलि पंजाबी की एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म ' ए फ्यू थिंग्स आई नो अबाउट हर' है। [42]

उनके जीवन की दो प्रसिद्ध फिल्में भारत में बनी हैं, मीरा (1945), एक तमिल भाषा की फिल्म, जिसमें एमएस सुब्बुलक्ष्मी ने अभिनय किया था , और मीरा 1979 में गुलज़ार की हिंदी फिल्म थी । उनके बारे में अन्य भारतीय फिल्मों में शामिल हैं: कांजीभाई राठौड़ द्वारा मीराबाई (1921) , धुंडीराज गोविंद फाल्के द्वारा संत मीराबाई (1929) , देबकी बोस द्वारा राजरानी मीरा / मीराबाई (1933) , टीसी वडिवेलु नायकर द्वारा मीराबाई (1936) और ए. नारायणन, साधवी । बाबूराव पेंटर द्वारा मीराबाई (1937)।, भक्त मीरा (1938) वाईवी राव द्वारा , मीराबाई (1940) नरसिम्हा राव भीमावरपु द्वारा, मीरा (1947) एलिस डुंगन द्वारा , मतवाली मीरा (1947) बाबूराव पटेल द्वारा , मीराबाई (1947) डब्लूजेड अहमद द्वारा , मीराबाई (1947) नानाभाई द्वारा भट्ट , प्रफुल्ल रॉय द्वारा गिरधर गोपाल की मीरा (1949), जीपी पवार द्वारा राज रानी मीरा (1956), विजय दीप द्वारा मीरा श्याम (1976), मीरा के गिरधर (1992)। [43]

मृणाल कुलकर्णी अभिनीत 26 एपिसोड की एक लोकप्रिय श्रृंखला मीराबाई नामक उनके जीवन पर आधारित यूटीवी द्वारा 1997 में निर्मित की गई थी । [44]

मीरा , उनके जीवन पर आधारित 2009 की भारतीय टेलीविजन श्रृंखला एनडीटीवी इमेजिन पर प्रसारित हुई ।

किरण नागरकर के उपन्यास कुकोल्ड में उन्हें केंद्रीय पात्रों में से एक के रूप में दिखाया गया है।

श्री कृष्ण भक्तो मीरा , उनके जीवन पर आधारित 2014 भारतीय बंगाली पौराणिक टेलीविजन श्रृंखला वर्तमान में स्टार जलसा पर प्रसारित हो रही है ।

मीरा बाई के जीवन की व्याख्या मीरा-द लवर... में एक संगीतमय कहानी के रूप में की गई है , जो कुछ प्रसिद्ध मीरा भजनों की मूल रचनाओं पर आधारित एक संगीत एल्बम है, जो 11 अक्टूबर 2009 को जारी किया गया था। [45]

मेड़ता में मीरा महल एक संग्रहालय है जो मूर्तियों, चित्रों, प्रदर्शनों और एक छायादार बगीचे के माध्यम से मीराबाई की कहानी बताने के लिए समर्पित है। [46]

निष्कर्ष

एलिस्टन और सुब्रमण्यम ने भारत में अंग्रेजी अनुवाद के साथ चयन प्रकाशित किए हैं। [35] [36] शेलिंग [37] और लैंडेस-लेवी [38] ने संयुक्त राज्य अमेरिका में संकलनों की पेशकश की है। स्नेल [39] ने अपने संग्रह द हिंदी क्लासिकल ट्रेडिशन में समानांतर अनुवाद प्रस्तुत किया है । सेठी ने उन कविताओं का चयन किया है जिनकी रचना संभवतः मीरा ने संत रविदास के संपर्क में आने के बाद की थी । [40] और मीरा पाकीरा।

मीरा के कुछ भजनों को रॉबर्ट बेली और जेन हिर्शफील्ड द्वारा मीराबाई: एक्स्टैटिक पोएम्स के रूप में अंग्रेजी में प्रस्तुत किया गया है । [41] हालाँकि, मीराबाई पर बने सभी धारावाहिकों में से, 1997 में वेद राही द्वारा मृणाल कुलकर्णी अभिनीत धारावाहिक मीराबाई मीरा के जीवन के प्रति अधिक सच्चा और सबसे लोकप्रिय था। इसमें मोहिंदरजीत सिंह द्वारा रचित और संध्या राव, कविता कृष्णमूर्ति और कई अन्य लोगों द्वारा गाए गए 30 से अधिक राग आधारित शास्त्रीय भजन हैं। इसका टाइटल ट्रैक 40 कोरस गायकों ने गाया था, जो आज तक का सबसे ज़्यादा गाना है।

वर्ष	नाम	टिप्पणी	खेल द्वारा	चैनल
1997	मीराबाई	26 एपिसोड; निर्देशक: वेद राही	मृणाल कुलकर्णी	दूरदर्शन
2009	मीरा	135 एपिसोड; निर्देशक: मुकेश सिंह, स्वप्निल महालिंग (शहाणे)	आशिका भाटिया, अदिति सजवान	एनडीटीवी इमेजिन
2014 - वर्तमान	श्री कृष्ण भक्तो मीरा	निदेशक: अमित सेनगुप्ता	अर्शिया मुखर्जी, देबद्रिता बसु	सितारा जलसा

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 3.541 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 5, Issue 4, July 2017 |

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. उषा निल्सन (1997), मीरा बाई, साहित्य अकादमी,आईएसबीएन 978-8126004119, पृष्ठ 1-15
2. ^ "मीरा बाई"। एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका। 4 दिसंबर 2016 को मूल सेसंग्रहीत। 30 जुलाई 2015को लिया गया.
3. ^ करेन पेचेलिस (2004), द ग्रेसफुल गुरु, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस , आईएसबीएन 978-0195145373 , पेज 21-23, 29-30
4. ^ नीति सदारंगानी (2004), मध्यकालीन भारत में भक्ति कविता: इसकी शुरुआत, सांस्कृतिक मुठभेड़ और प्रभाव, सरूप एंड संस, आईएसबीएन 978-8176254366 , पृष्ठ 76-80
5. ^ रयान, जेम्स डी.; जोन्स, कॉन्स्टेंस (2006)। हिंदू धर्म का विश्वकोश । इन्फोबेस प्रकाशन। पी। 290. आईएसबीएन 9780816075645.
6. ^ कैथरीन आशेर और सिंथिया टैलबोट (2006), यूरोप से पहले भारत, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस,आईएसबीएन978-0521809047, पृष्ठ 109
7. ^ एनल्स एंड एंटीक्विटीज़ ऑफ़ राजस्थान वॉल्यूम। 1 पेज नं. 75
8. ^ नैन्सी मार्टिन-केरशॉ (2014), प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत में स्त्रीत्व के चेहरे (संपादक: मंदाक्रांता बोस), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195352771,पृष्ठ162-178
9. ^ जॉन स्ट्रैटन हॉले (2002), एसेटिसिज्म (संपादक: विंसेंट विंबुश, रिचर्ड वैलेंटासी), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,आईएसबीएन978-0195151381, पेज 301-302
10. ^ एडविन ब्रायंट (2007), कृष्णा: ए सोर्सबुक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195148923 , पृष्ठ 254
11. ^ एडविन ब्रायंट (2007), कृष्णा: ए सोर्सबुक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195148923 , पृष्ठ 242
12. ^ उषा निल्सन (1997), मीरा बाई, साहित्य अकादमी,आईएसबीएन978-8126004119, पृष्ठ 12-13
13. ^ नैन्सी मार्टिन-केरशॉ (2014), प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक भारत में नारी के चेहरे (संपादक: मंदाक्रांता बोस), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195352771 , पृष्ठ 165
14. ^ उषा निल्सन (1997), मीरा बाई, साहित्य अकादमी,आईएसबीएन978-8126004119, पृष्ठ 16-17
15. ^ ये हैं जोधपुर से मुंहता नैणसी की ख्यात, अमृतसर से प्रेम अंबोध और वाराणसी से नाभादास की छप्पी ; देखें: जेएस हॉले और जीएस मान (2014), कल्चर एंड सर्कुलेशन: लिटरेचर इन मोशन इन अर्ली मॉडर्न इंडिया (संपादक: थॉमस डी ब्रुजन और एलीसन बुश), ब्रिल एकेडमिक, आईएसबीएन 978-9004264472 , पृष्ठ 131-135
16. ^ जेएस हॉले और जीएस मान (2014), कल्चर एंड सर्कुलेशन: लिटरेचर इन मोशन इन अर्ली मॉडर्न इंडिया (संपादक: थॉमस डी ब्रुजन और एलीसन बुश), ब्रिल एकेडमिक, आईएसबीएन 978-9004264472 , पेज 131-135
17. ^ जॉन एस हॉले (2005), थ्री भक्ति वॉयस: मीराबाई, सूरदास और कबीर इन देयर टाइम्स एंड अवर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195670851 , पेज 128-130
18. ^ एडविन ब्रायंट (2007), कृष्णा: ए सोर्सबुक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195148923 , पृष्ठ 244
19. ^ सुब्रमण्यम, वीके (1 फरवरी 2005)। मीरा के रहस्यवादी गीत (हिन्दी और अंग्रेजी में) । अभिनव प्रकाशन. आईएसबीएन 8170174589. 23 नवंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 23 नवंबर 2016 को लिया गया ।
20. ^ "गीत - राम रतन धन पायो (लता मंगेशकर गायन)" । www.tophindilyrics.com । शीर्ष हिंदी गीत. 9 दिसंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 23 नवंबर 2016 को लिया गया ।
21. ^ मीरा की कविता: अंग्रेजी में अनुवादित उनके गीतों का एक संग्रह (पीडीएफ) । काव्य शिकारी. 23 नवंबर 2016 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 23 नवंबर 2016 को लिया गया ।
22. ^ "मीरा के भजन (हिंदी)" । www.hindividya.com . हिंदी विद्या. 10 जून 2016. 23 नवंबर 2016 को मूल से संग्रहीत । 23 नवंबर 2016 को लिया गया ।
23. ^ एडविन ब्रायंट (2007), कृष्णा: ए सोर्सबुक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,आईएसबीएन978-0195148923, पृष्ठ 244-245
24. ^ जॉन स्ट्रैटन हॉले (2002), एसेटिसिज्म (संपादक: विंसेंट विंबुश, रिचर्ड वैलेंटासी), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195151381 , पृष्ठ 302
25. ^ जॉन स्ट्रैटन हॉले (2002), एसेटिसिज्म (संपादक: विंसेंट विंबुश, रिचर्ड वैलेंटासी), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195151381 , पृष्ठ 303
26. ^ जॉन स्ट्रैटन हॉले (2002), एसेटिसिज्म (संपादक: विंसेंट विंबुश, रिचर्ड वैलेंटासी), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195151381 , पृष्ठ 304
27. ^ क्लैरी, रैंडी लिन। 'सिखिंग' पति: सिख धर्मग्रंथ में दुल्हन की कल्पना और लिंग । राइस यूनिवर्सिटी, 2003।

28. ^ सिंह, पशौरा। "आदि ग्रंथ अध्ययन में हालिया शोध और बहस।" धर्म कम्पास 2.6 (2008): 1004-1020।
29. ^ ज़ेलियट, एलेनोर। "इतिहास में मध्यकालीन भक्ति आंदोलन: अंग्रेजी में साहित्य पर एक निबंध।" हिंदू धर्म . ब्रिल, 1982. 143-168.
30. ^ सिंह, पशौरा। "आदि ग्रंथ में शास्त्रोक्त अनुकूलन।" जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ रिलिजन 64.2 (1996): 337-357।
31. ^ जेएस हॉले और जीएस मान (2014), कल्चर एंड सर्कुलेशन: लिटरेचर इन मोशन इन अर्ली मॉडर्न इंडिया (संपादक: थॉमस डी ब्रुजन और एलीसन बुश), ब्रिल एकेडमिक, आईएसबीएन 978-9004264472 , पृष्ठ 113-136
32. ^ डिर्क वाइमैन (2008), आधुनिकता की शैलियाँ: अंग्रेजी में समकालीन भारतीय उपन्यास, रोडोपी,आईएसबीएन978-9042024939, पृष्ठ 148-149
33. ^ परिता मुक्ता (1998), अपहोल्डिंग द कॉमन लाइफ: द कम्युनिटी ऑफ मीराबाई, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,आईएसबीएन978-0195643732, पेज viii-x, 34-35
34. ^ एडविन ब्रायंट (2007), कृष्णा: ए सोर्सबुक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, आईएसबीएन 978-0195148923 , पृष्ठ 245
35. ^ मीराबाई, वीके सुब्रमण्यम, मीरा के रहस्यवादी गीत , अभिनव प्रकाशन, 2006 आईएसबीएन 81-7017-458-9 , आईएसबीएन 978-81-7017-458-5 , [1] 26 जून 2014 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत
36. ^ एल्स्टन, ए.जे., द डिवोशनल पोयम्स ऑफ़ मीराबाई , दिल्ली 1980
37. ^ शेलिंग, एंड्रयू, फॉर लव ऑफ़ द डार्क वन: सोंग्स ऑफ़ मीराबाई , प्रेस्कॉट, एरिज़ोना 1998
38. ^ लैंडेस-लेवी, लुईस, स्वीट ऑन माई लिप्स: द लव पोयम्स ऑफ मीराबाई , न्यूयॉर्क 1997
39. ^ स्नेल, रूपर्ट. हिंदी शास्त्रीय परंपरा: एक ब्रज भाषा रीडर , लंदन 1991, पीपी 39, 104-109।
40. ^ सेठी, वीके, मीरा: द डिवाइन लवर , राधा स्वामी सत्संग ब्यास, पंजाब 1988
41. ^ बेली, रॉबर्ट / हिर्शफील्ड, जेन, मीराबाई: एक्स्टैटिक पोएम्स , बोस्टन, मैसाचुसेट्स 2004
42. ^ "मीरा बाई की किंवदंती अंजलि पंजाबी द्वारा पुनः सुनाई गई" । टाइम्स ऑफ इंडिया । 4 अक्टूबर 2002. 14 जुलाई 2013 को मूल से संग्रहीत । 23 सितंबर 2014 को लिया गया .
43. ^ राजाध्यक्ष, आशीष; विलेमेन, पॉल (1999)। भारतीय सिनेमा का विश्वकोश । ब्रिटिश फ़िल्म संस्थान. आईएसबीएन 9780851706696. 12 अगस्त 2012 को पुनःप्राप्त .
44. ^ "वेद राही का धारावाहिक 'मीरा' डीडी1 पर प्रसारित होगा" । इंडिया टुडे । 30 अप्रैल 1997 . 30 सितंबर 2014 को लिया गया ।
45. ^ "वंदना विश्वास: होम" । 24 फरवरी 2015 को मूल से संग्रहीत । 12 अक्टूबर 2015 को लिया गया ।
46. ^ सेंगर, रेशम. "राजस्थान के मीरा महल में मीराबाई की उपस्थिति का अनुभव" । टाइम्स ऑफ इंडिया यात्रा । 13 नवंबर 2015 को मूल से संग्रहीत । 21 फरवरी 2015 को पुनःप्राप्त